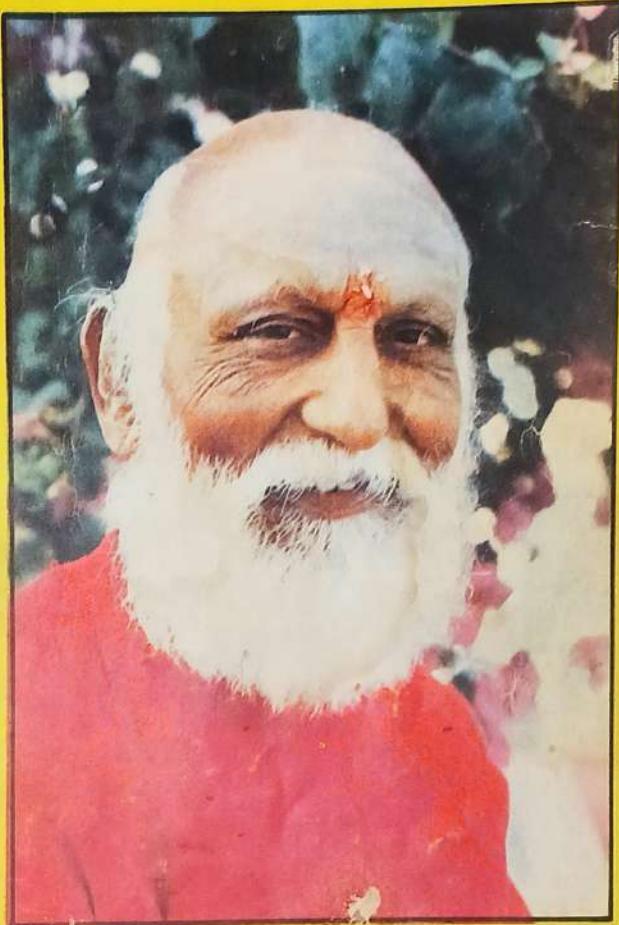


शिवोम् वार्षी



परम पूज्य गुरुदेव शक्तिपाताचार्य
श्री शिवोम् तीर्थजी महाराज

शिवोम् वाणी

ऋषि परम पूज्य गुरुदेव

स्वामी शिवोम् तीर्थजी महाराज

प्रकाशक

श्री विष्णुतीर्थ साधना सेवा न्यास

१२ / ३ ओल्ड पलासिया, इन्दौर



मूल्य दस रुपये

प्राक्कथन

मुझसे पूज्य गुरुदेव शिवोऽम तीर्थ जी महाराज की इस पुस्तक के संबंध में दो शब्द लिखने के लिए कहा गया है। यह कार्य हमारे लिए सहज, सरल होते हुए भी कठिन है पर साथ ही अपने भावोद्धार उनके भजनामृत के विषय में प्रकट करना हमारे लिए एक विशेष सम्मान भी है।

पूज्य गुरुदेव से हमारा परिचय सम्पर्क, संबंध अत्याधिक पुराना है पर, वर्षों के मानिन्द जर्जर नहीं अपितु मिश्री की मिठास की तरह घुला हुआ, अत्यंत प्रगाढ़। हम दोनों तब नंगल में रहते थे, जहां पूज्य गुरुदेव (तब श्री ओमप्रकाश जी) नौकरी करते थे और हम थे संगीत शिक्षक। हम चार पांच लोग, जिन्हें अध्यात्म में रुचि थी, परस्पर घनिष्ठ रूप से संबंधित थे। यह भी एक संयोग ही रहा कि गुरुदेव को भगवन् विष्णुतीर्थ महाराज से प्रथम परिचय कराने का सौभाग्य हमें ही प्राप्त हुआ। भगवन् विष्णुतीर्थ जी का अनुग्रह प्राप्त होने के पश्चात तो 'गुरुदेव' की आध्यात्मिक साधना का प्रवाह कल कल करता अबाध और तीव्र गति से वह निकला। उनमें से प्रेम, भक्ति, दया एवं समर्पण के रूपों फूट पड़े - निरंतर, अगाध और अविराम उन्हें प्रभु विष्णुतीर्थ जी महाराज का सानिध्य प्राप्त होता रहा और वे भी समर्पित भाव से प्रभु सेवा साधना में जुटे रहे। यह बड़े महाराज श्री का ही प्रताप था कि 'गुरुदेव' ने अपने ब्रह्मचारी काल में अपनी प्रथम पुस्तक 'साधनापथ' की रचना की जिसे बड़े महाराज श्री सहित सभी साधक बंधुओं ने अत्यन्त सराहा। इसके बाद तो गुरुदेव की लेखनी अविरल

चलती रही, फलस्वरूप अनेकानेक महत्वपूर्ण पुस्तकें अस्तित्व में आईं जिनसे "शक्तिपात" विषय समृद्ध हुआ।

पर गुरुदेव की रचना अभी तक मूलतः पद्य में ही थी किन्तु पिछले वर्ष अपने अमेरिका प्रवास के दौरान (जुलाई १९९१ से) गुरुदेव के अंतःस्तल से पद्य का एक अलौकिक प्रकाश फूट पड़ा जिसने चारों और अपनी घटा बिखरानी शुरू की। पूज्य गुरुदेव के अंतरंग से निस्सृत शक्ति से संयुक्त, गीतों और भजनों का यह झारना विविध रंगों को तो अपने में समेटे हुए है ही, साथ ही शक्तिपात के सिद्धान्तों को सार्थक सरल और बोधगम्य ढंग से प्रतिपादित भी करता है। इसमें गुरुकृपा के साथ – साथ प्रेम, समर्पण, वैराग्य और शक्ति जागरण के सभी रंग विद्यमान हैं। पर गुरुदेव ने सर्वाधिक महत्व गुरु और गुरुकृपा को ही दिया है जैसे "गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव देवा....." या "गुरु संगत की महिमा न्यारी सभी जगह उपलब्ध नहीं"।

'गुरुदेव' प्रभु के प्रति तुलसी का सा दैन्य भाव दर्शने में समर्थ हैं, "मैं जैसा कैसा तेरा हूं स्वीकार करो, स्वीकार करो। मैं आया शरण तुम्हारी हूं, स्वीकार करो, स्वीकार करो" तो दूसरी ओर कबीर की तरह अपने प्रियतम की खोज में व्याकुल भी हैं। वे "मैं तो प्रियतम के घर जाऊँगी, हार सिंगार सोहत नहीं मो को, अंग विभूति लगाऊँगी"। यहीं नहीं बल्कि प्रिय की खोज के साथ साथ गुरुदेव आत्मा परमात्मा के संबंधों को भी अपने भजनों में व्यक्त करते चलते हैं। उनकी चिंता वाजिब है और गुरुदेव कदापि नहीं चाहते कि जगत की चिंता में राम विस्मृत कर दिए जाएं क्योंकि यदि जग को थामा तो राम हाथ से निकल जाएंगे क्योंकि तब मन चंचल होगा और चित्त उसी प्रकार बिखर जाएगा जैसे धागे के टूटने पर मनके के दाने। इसलिए पूज्य गुरुदेव के

भजन और गीत, साधक के लिए, गुरुबंधुओं के लिए कितने सार्थक हैं, इसे तो पढ़कर या सुनकर और उसके बाद उस पर चिंतन मनन करके ही जाना जा सकता है।

वास्तव में पूज्य गुरुदेव के अंतरंग से निकले ये भजन और गीत उसी प्रकार घटा बिखरने में सक्षम हैं जैसे मीरा, कबीर या तुलसी की रचनाएं। यदि स्वनाम धन्य मीरा की विरह वाणी या तुलसी की भक्ति परक समर्पण की भावना कबीर की जग की चिंता से व्याकुल पुकार, आध्यात्मिकता को जागृत करने में, प्रभु के प्रति श्रद्धा प्रेम और समर्पण के भाव भरने में सक्षम हैं तो पूज्य गुरुदेव की रचनाएं भी ऐसी ही सांकेतिक अभिव्यक्तियाँ हैं जो निश्चित ही आध्यात्मिक साहित्य की अमूल्य धरोहर सिद्ध होंगी।

शुभकामनाओं के साथ

७ जून १९९२

स्वामी राधाकृष्ण तीर्थ

शिवोऽम कुटी

बावई आश्रम

अनुक्रमणिका

क्र	भजन	पृष्ठ	क्र	भजन	पृष्ठ
१	मान ले मेराकहना	१	२६	प्रियतम के दर	४२
२	हे कुंडलिनी माँ	२	२७	नारायण गोविंद	४४
३	जब प्रेम हृदय में	४	२८	मेरा प्रियतम हरदम	४६
४	है गुरु किरपा	६	२९	मेरो मन राम	४७
५	मैं जैसा कैसा तेरा	७	३०	राम की दुल्हनिया	४८
६	अब मेरा तेरे सिवा	८	३१	जगत की धून में	४९
७	प्रेम मगन मन डोलत	९	३२	भजन बिना विरथा	५०
८	कर्म लेख लिख लिख	११	३३	करी किरपा गुरुदेव	५१
९	दुल्हनिया चली पिया	१३	३४	गुरुदेव गुरुदेव	५२
१०	मेरे प्रियतम जैसा	१५	३५	तेरा नाम अनोखा	५३
११	विमान में बैठा उड़ता	१७	३६	जो भा रत है	५५
१२	मन का धर्म प्रतीक्षा	१९	३७	काह करूँ? मन।	५६
१३	अब तो राम शरण	२१	३८	अब की सुनो पुकार	५८
१४	मैं तो प्रियतम	२२	३९	जगत हुआ है बावरा	६०
१५	सुने ही सरेगी	२३	४०	दीनदयाल दीनन	६१
१६	मैं निर्गुनिया	२५	४१	कृपा दृष्टि का वर्णन	६३
१७	सोई सुहागन रामजी	२७	४२	वासनानुसार जीव	६५

१८ मैं भटकत भटकत	२८	४३ गुरु प्रेम में रंगा	६६
१९ जय जय जय गुरु	३०	४४ सीताराम सीताराम	६८
२० कर्म करना ही	३२	४५ मेरी अर्जी प्रभु के	७०
२१ वासना में डूब गयो	३४	४६ प्रभु अनन्त	७२
२२ बिन माँझी बिन	३५	४७ नाम कमाई कर ले	७४
२३ गुरु अवतार घटा	३६	४८ जो गुरु सेवा	७५
२४ मैं खोज फिरा	३८	४९ नाम प्रभु का	७७
२५ मेरा प्रियतम सबसे	४०	५० प्रेम की वर्षा	७९

(१)

मान ले मेरा कहना रे मन, काहे को भरमाये है ।
विषयों में सुख नहीं मिलेगा, काहे को दुःख पावे है ॥
खाली हाथ जगत में आया, खाली हाथ चले जाना ।
धन परिवार जगत के पीछे, काहे को तू धावे है ॥
जिस को समझा तूने अपना, साथ नहीं वह दे पाया ।
आए अकेला जाए अकेला, काहे को भय खाये है ॥
काम क्रोध मद लोभ निरन्तर, तुझ को धेरे रहते हैं ।
उदासीन इन सब से हो तू, काहे राम न ध्यावे है ॥
मेरा तेरा करते करते, जीवन बीत गया सब ही ।
अभी समझा न आई तुझ को, पीछे तू पछतावे है ॥
समय अमूल्य जगत में पाया, सद्- उपयोग नहीं कीना ।
बाकी रहा, तू हरि भजन कर, राम न क्यों तू गाये है ॥
मानुष जनम अमोलक पाया, नाम हरि का जपने को ।
नाम हरि का भूल गया तू, यूं ही समय गंवावे है ॥
कितना मैं समझाऊं तुझ को, समझ नहीं तू पाता है ।
जगत खिलौना क्षण भर का है, टूट गया मर जावे है ॥
चंचल होकर भटका है तू, तू ने ठौर नहीं पायी ।
राम भजन ही एक ठिकाना, तब ही तू सुख पाये है ॥
तीर्थ शिवोम् भजन तू कर ले, जीवन तेरा सफल बने ।
साध संग, सद्गुरु की सेवा, अन्तर आनन्द पावे है ॥



(२)

हे कुण्डलिनी मां जगदम्बा जागो जागो जागो
हे मूलाधार निवासिनी मां, जागो.....
तुम युगों युगों तक सुस रही, मैं विषय भोग में लिप्त रहा
अब तो त्यागो मां निद्रा को, जागो.....
मैं आर्त हो रहा विषयों से मुक्ति का द्वार नहीं मिलता
है द्वार तुम्हारा जगना ही, जागो.....
गुरुदेव ईश ब्रह्मा तुम हो, शंकर नारायण तुम ही हो
अब कष्ट हरो जगजननी मां जागो

हैं तीनों कुण्डल तीनों गुण, तुम सत् रज् तम् से ढकी हुई
आवरण त्याग अब जाग उठो, जागो.....
तेरी निद्रा में अतिशय दुख, जीवों को भोग सताते हैं
है मन चंचल, आसक्त चित्त, जागो.....
हो अन्तर्मुखी प्रवाहित मां, तुम अग्नि रूप धारण कर लो
हो विषय वासना दग्ध तभी, जागो.....
मैं योग भक्ति जप तप संयम, अभिमान युक्त करता हारा
पर तुम न जगीं, न जगीं, न जगीं, जागो.....
अब कृपा करो मां दयामयी, निज बंधन में मैं तड़प रहा
अब जाग उठो, अब जाग उठो, जागो.....
गुरुदेव कृपा का आश्रय ले, अब अन्तर्मुखी प्रकाशित हो

मन की मलीनता दूर करो, जागो.....

अब विष्णु तीर्थ का रूप धरो, है विनय शिवोम् की चरणों में
अब तीर्थ बनो, अब तीर्थ बनो, जागो.....

(३)

१. जब प्रेम हृदय में उमड़ पड़ा,
आनंद ही है, आनंद ही है ।
अब चिन्ता जग की कौन करे
आनंद ही है, आनंद ही है।
२. अनुराग हुआ मन में प्रभु का
मन लीन हुआ हरि धरणों में .
अब किस को किस की चिन्ता है
आनंद ही है, आनंद ही है।
३. मैं लगा रहा पुरुषारथ में
पर मन को शुद्ध न कर पाया
जब हुआ अनुग्रह चिन्ता क्या
आनन्द ही है, ज्ञानन्द ही है।
४. कोई आता है, कोई है जाता
जग की यह रीत चली आई
फिर जन्म मरण की चिन्ता क्या
आनन्द ही है, आनन्द ही हैं ।
५. जो सुख की हैं इच्छा करते
दुख में व्यतीत जीवन होता
जब अन्तर सुख, फिर चिन्ता क्या
आनन्द ही है, आनन्द ही है ।
६. है विषय वासना अतिशय दुख

सुख में भरमाती, दुख देती
 मन भोग मुक्त, फिर चिंता क्या
 आनन्द ही है, आनन्द ही है
 ७. सारा जग भव जल में डूबा
 कोई बंधन मुक्त नहीं होता
 मन शोक रहित फिर चिन्ता क्या
 आनन्द ही है, आनन्द ही है ।
 ८. मैं करता भरता भोगता हूं
 यह ही सब बंधन की जड़ है
 मन द्रष्टा हुआ तो चिन्ता क्या
 आनन्द ही है, आनन्द ही है ।
 ९. अब तो दुनियादारी छूटी
 मन मस्त हुआ, मन ही मन में
 मन मुक्त हुआ, फिर चिन्ता क्या
 आनन्द ही है, आनन्द ही है ।
 १०. हर रोज़ दीवाली है अब तो
 मन में प्रसन्नता भरी हुई
 हैं चारों दिशा प्रकाशित अब
 आनन्द ही है, आनन्द ही है ।
 ११. तीरथ शिवोम् किरतार्थ हुआ
 प्रभु विष्णु तीर्थ की कृपा हुई
 बंधन टूटे सीमाएं सब
 आनन्द ही है, आनन्द ही है ।



(४)

है गुरु किरपा अनत अपार
१. जा क्षण दया दृष्टि भर्द्द शिष पर
लागा बाण उर आई
प्रेम भाव जागा चित्त माहीं
पलट शक्ति अन्तर दर्शाई
२. विषय वासना, पाप राशि सब
जलती जैसे धास का पूला
भांति भांति की क्रिया प्रव.. अत
मन में संचित, बाहर आई
३. गरजन तरजन नाद होई परगट
अनहृद परमानन्द का मेला
जन्म हुआ गुरुदेव का अन्दर
चित्त कपाट खुल जाई
४. स्वयं सिद्ध साधन हुई लागा
करत नहीं कुछ आवा
साधन सब ही गुरु की किरपा
अन्य सब विरथा जाई
५. तीर्थ शिवोम् हुआ मन ऐसा
रोग शोक सब जाई
ज्ञान प्रेम आनन्द का सागर
अब नहीं समेटा जाई

(५)

मैं जैसा कैसा तेरा हूं, स्वीकार करो, स्वीकार करो
मैं आया शरण तुम्हारी हूं, स्वीकार करो
मैं अधम नीच मनमूढ़ हठी, बुद्धि विवेक से हीन सदा
पर तेरे प्रति समर्पित हूं, स्वीकार करो
मन रूपी नैया पापों से, अब भरी तथा डूबी जाती
पतवार चलाओ, वेग करो, स्वीकार करो
मैं विषय भोग आसक्त रहा, हो मोह-युक्त रत् कर्मों में
अब तो प्रभु नैया पार करो, स्वीकार करो
मैंने जब तुम को पाने को, पुरुषारथ का अवलम्ब लिया
तब क्रोध मोह ने जकड़ लिया, स्वीकार करो
तेरे समीप अवगुण सदगुण का, भेद विवेक नहीं है
प्रभु मेरा भी फिर उद्धार करो, स्वीकार करो
प्रभु भेद बुद्धि मेरी हर लो, तेरे चरणों में समा जाऊं
तुम को ही जपूं और ध्यान करूं, स्वीकार करो
तीरथ शिवोम् प्रभु चरणों में, है पड़ा समर्पित शरण हुआ
अब नैया पार करो, प्रभु पार करो, स्वीकार करो

अब मेरा तेरे सिवा मेरे प्रभु कोई नहीं
 अपना तू बेगाना तू, तेरे सिवा कोई नहीं ॥
 दिल तो तुझ को दे दिया, यह जान कर दिलबर है तू
 यार तू दिलदार तू तेरे सिवा कोई नहीं ॥
 आब में होकर रवां तू ही अयां है हो रहा
 लहर भी तू बहर भी तेरे सिवा कोई नहीं ॥
 बागो जंगल शहर की रौनक तेरे ही आसरे
 गुल भी तू, बुलबुल भी तू, तेरे सिवा कोई नहीं ॥
 तेरे सदके आशिकों का इश्क सादिक हो रहा
 इश्क तू माशूकं तू तेरे सिवा कोई नहीं ॥
 तुझको पाने के लिए है अपना दिल ही रास्ता
 दिल में घर कर देखा जब, तेरे सिवा कोई नहीं ॥
 है तड़पता दिल मेरा तेरे दरस को, मिलन को
 शिव ओम का अब हे प्रभु, तेरे सिवा कोई नहीं ॥



(७)

प्रेम मगन मन डोलत नाहीं
प्रेम नहीं तो कुछ भी नाहीं
१. प्रेम का प्याला भर भर पी तू
प्रेम से प्रेम बढ़ाता जा तू
प्रेम मस्त हो जा मतवाला
प्रेम नहीं तो कुछ भी नाहीं
२. प्रेम का मारग, सिर की बाजी
अहंकार छोड़, होवे गी ताजी
प्रेमी होकर रोना कैसा ?
प्रेम नहीं तो कुछ भी नाहीं
३. प्रेम ही धर्म है, प्रेम ही कर्म है
प्रेमी का है कर्म ही सेवा
प्रेमी बन कर सेवामय हो
प्रेम नहीं तो कुछ भी नाहीं
४. प्रेम न मिलता हाट बाजारे
प्रेम लेन को सिर को उतारे
प्रेम का भेद समझ ले प्यारे
प्रेम नहीं तो कुछ भी नाहीं
५. प्रेमी प्रभु से नाता जोड़े
नाता दुनिया से वह तोड़े
विषय वासना से मुंह मोड़े
प्रेम नहीं तो कुछ भी नाहीं

६. प्रेम राम का बने निरन्तर
आवे नाहीं ता में अन्तर
अनथक हो कर राम भजन कर
प्रेम नहीं तो कुछ भी नाहीं

७. तीर्थ शिवोम् गुरु किरपा कीनी
प्रेम चिंगारी उज्ज्वल कीनी
मोह मिटा ममता भई झीनी
प्रेम नहीं तो कुछ भी नाहीं



(c)

१. कर्म लेख लिख लिख कर प्यारे
काहे को मन भरता है ।
राम प्रेमसेवा अपना कर
चित्त शुद्ध न करता है । ।
२. कर्म लेख बंधन का कारण
जीव जकड़ में आता है
विषयों में आसक्त चित्त हो
फिर फिर जीवन पाता है
३. प्रेम भक्ति का साबुन लेकर
सेवा जल से शुद्ध करो
मानव जनम अमोलक पयारे
काहे इसे गंवाता है
४. सन्तों की सेवा कर प्राणी
प्रेम भक्ति तू पायेगा
तू निजानन्द में मस्त हुआ तब
कर्म लेख मिट जाएगा
५. परम दयालु गुरु कृपालु
मारग प्रेम दिखलाता है
भक्ति प्रेम की डोर पकड़ कर
कर्म न तुझे सताता है
६. प्रेम भक्ति की रगड़ से सारे

कर्म तेरे मिट जाएंगे
निर्मल मन हो प्रेम से भर कर
परा भक्ति को पाता है
७. तीर्थ शिवोम् विनय गुरुवर से
भक्ति दान दीजो मुद्दा को
प्रेम मगन हो भक्ति भाव से
भव बंधन कट जाता है ।

(९)

१. दुल्हनियां चली पिया के
पीहर का घर छोड़ के
जगत के सारे रंग छूट गए
रंग पिया का देख के
२. गुरु कृपा से मारग पाया
दूर भया अज्ञान
अन्तज्योति जाग उठी तब
रंग नयारा देख के
३. जगत की माया, विषय वासना,
केंचुली ज्यों भुजंगा
पीछे छूटा सभी पसारा
छवि पिया की देख के
४. मस्त हुआ मन, मन ही
मन में झटक दिया संसारा
जगत है मिथ्या प्रकट हो
गया प्रियतम का गुण देख के
५. कैसी तृष्णा, चिन्ता कैसी
दूर हुआ भ्रम सारा
चिन्ता तृष्णा मुक्त हुआ मन
आनन्द प्रभु का देख के

६. अन्तर में आनन्द अपारा

नहीं समेटा जाता मन में
चारों दिशा आनन्दित हो गई
मुख प्रियतम का देख के

७. तीर्थ शिवोम् कृपा भई पी की

विषय संग सब छूटा
जोत में जोत मिली तब ही तो
घर प्रियतम का देख के



(१०)

मेरे प्रियतम जैसा कोई नहीं

रूप अनोखा रंग अनोखा

उस के जैसा कोई नहीं

१. सर्व व्यापक, सर्व नियन्ता

घट घट में वह बसता है

कोई उस को देख न पाता

उस के जैसा कोई नहीं

२. सर्व शुद्ध वह सब से न्यारा

मायातीत हितकारी यह

कर्ता हरता वह है भरता

उसके जैसा कोई नहीं

३. निर्गुण रह कर, कर्ता है वह

सगुण स्वरूप भी निर्गुण अन्दर
लीला उस की न्यारी सब से

उस के जैसा कोई नहीं

४. समझ बूझ से परे वह रहता

कोई उस को जान न पाता

अगम अगोचर है पी मेरा

उस के जैसा कोई नहीं

५. गुरु कृपा है, अन्तर शक्ति

पाए बिना कोई समझ न पाता

गुरु शक्ति है विस्मयकारी

उस के जैसा कोई नहीं

६. तीर्थ शिवोम् वह उस को जाने

जा पर कृपा करे अति भारी

अन्तर चक्षु तब खुल जाते

उस के जैसा कोई नहीं



(११)

१. विमान में बैठा उड़ता जाता

पृथ्वी समतल दिखती है

ऊंच नीच का भेद मिटा तब

दुनिया बौनी दिखती है

२. चिदाकाश में गति साधक की

गुण निर्गुण की दृष्टि मिटती

सारा जगत गौण हो जाता

शक्ति व्यापक दिखती है

३. चिदानन्द का रंग अनोखा

माया में उपलब्ध नहीं

माया मिथ्या दुःखदायक अतिशय

वृत्ति समता पाती है

४. जब लगि सृष्टि सत्य भासती

ऊंचा नीचा लक्षित होता

नाम रूप की सृष्टि मिथ्या

गुणातीत हो जाती है

५. परा भक्ति प्रभु कृपा से होती

प्रयत्न जीव कर कर हारा

गुरु माध्यम से कृपा बरसती

शक्ति जाग्रत होती है
६. क्रिया अलौकिक शक्ति करती
पाप नाश होते भारी
चित्त शुद्ध होता तब ही तो
बुद्धि निर्मलता पाती है
७. विष्णु तीर्थ प्रभु किरपा कीनी
तीर्थ शिवोम् निहाल हुआ
मिथ्या भान टूट कर वृत्ति
सुखमय होती जाती है ।



मन का धर्म प्रतीक्षा करना
 आशा करता रहता है
 यह पाऊंगा, इस की चिन्ता
 नित्य निरन्तर करता है

२. बुरी वासनाओं की चिन्ता में
 सुख पाता रहता है
 मोह युक्त हो जग में जीवन
 व्यर्थ गुज़ारे जाता है

३. आशा एक पूर्ण होने पर
 उभर के दूजी आती है
 इसी प्रतीक्षा में जीवन को
 ढोता खोता रहता है

४. यदि प्रतीक्षा आशा करना
 जो तुम समझो आवश्यक
 प्रभु प्रेम में मन को लगाओ
 जीवन सुन्दरता पाता है

५. प्रभु प्रेम में अतिशय सुख है
 पाप नाश होते मन के
 जगत विषय से मुंह को मोड़ो
 मन वश में हो जाता है

६. गुरु सेवा, शरणागत होकर
 सेवामय जीवन कर लो
 प्रभु मारग उपलब्ध तभी तो

मन ही मन सुख पाता है
७. सेवा भाव से कर्म करो तुम
आसक्ति का त्याग करो
भजो निरंतर राम नाम को
चित्त शुद्ध हो जाता है ।

८. तीर्थ शिवोम् राम भज प्राणी
मंगलमय जीवन कर लो
राम भजन ही, राम भजन ही
जीवन सुखी बनाता है



अब तो राम शरण लौ लागी
 गुरु प्रसाद वर्षा हुई जा दिन, अन्तर ज्योति जागी ।
 अनहृद बाजे बाजन लागे, सुरत निरन्तर लागी ।
 माया मोह ममता सब भागें, अचल समाधि लागी ।
 निज अभिमान हुआ अब द्रष्टा, सिद्ध क्रियाएं जागी ।
 गुरु शक्ति की लीला न्यारी, बहें ज्ञान की धारी ।
 कहे शिवोम् भजन गुरुवर का, कट जाए विपदा सारी ।



(१४)

मैं तो प्रियतम के धर जाऊँगी
हार सिंगार सोहत नहीं मो को
अंग विभूति लगाऊँगी ।

विषय वासना त्याग जगत की
पी में ध्यान लगाऊँगी ॥

जगत विरक्ति को अपना कर
सत संगत में मन को रमा कर
सद्गुण से मैं मन को सजा कर
प्रभु मारग अपनाऊँगी ॥

सखी सहेली मोह के कारण
विद्र अनेकों मुझे दिखातीं
मेरा मन तो पी रंग राता
सरपट भागी जाऊँगी ॥

गुरु मारग अवलम्बन ले कर
सब बाधाएं बनें सहायक
राम नाम की डोर पकड़ कर
पी की सेज अनोखा सुख है
मारग भटक न जाऊँगी !!

पी की सेज अनोखा सुख है
विषय वासना सब हीं फीकी
कहे शिवोम् गुरु चरण पकड़ कर
परमानन्द को पाऊँगी ।



(१५)

१. सुने ही सरेगी महाराज

मेरी अर्ज सुनो

मैं कब की खड़ी हूं तेरे द्वार

मेरी अर्ज सुनो

२. सखियाँ मुझको ताने मारे

मूरख कह कह मुझे पुकारें

मेरी लौ तो तुम से लागी

कैसे हटू तेरे द्वार मेरी अर्ज सुनो

३. घर परिवार जगत सब छोड़ा

केवल तुम से नाता जोड़ा

यश अपयश दुःख सुख सब त्यागा

किया मानस विश्राम मेरी अर्ज सुनो

४. हिरदय मेरा विरह अगन में

भस्म हुआ, अब नाम का हिरदय

पर तुम निष्ठुर नहीं पसीजे

कैसे करूं पुकार मेरी अर्ज सुनो

५. किए समर्पण बैठी हूं मैं

कब तक न स्वीकार करोगे

अब तो खोलो बन्द द्वार को

सुन लो हाहाकार मेरी अर्ज सुनो

६. तेरा मेरा नित्य का नाता

एक जाति के दोनों हम हैं

फिर अपने से दूर क्यों रखा
पकड़ो मेरा हाथ मेरी अर्ज सुनो

७.द्वार बन्द मैं खोल न पाऊं
क्या मैं करू, कुछ समझ न पाऊं
कहे शिवोम् हरि लाज रखो अब
हट जाए माया जाल मेरी अर्ज सुनो

(१६)

१. मैं निर्गुनियां गुन नहीं कोई
करि किरपा प्रभु अवसर दीना
बिसर गई मैं सोई ॥

२. निर्गुण सगुण गुणों के अन्दर
बाहर गुण नहीं कोई
जौ लग जीवन, सगुण जीव है
असद ही निर्गुण होई ॥

३. प्रभु मेरा ऐसा है निर्गुण
जा मे गुण नहीं कोई
गुणातीत प्रभु मेरा प्रीतम
कैसे पाऊं सोई ॥

४. बाहर से अन्दर जब जाऊं
नाम प्रभु का पाऊं
सद्गुण विकसित ही तब ही तो
सगुण कहावऊं तो ही ॥

५. प्रीतम सरजा जगत अनोखा
तीनों गुण विस्तारे
निर्गुण सगुण हुए तब ही तो
रहा वह निर्गुण न्यारे ॥

६. सगुण जीव की ऐसी माया
जा मैं सद्गुण नाही
मैं निर्गुण स्वरूप भई ऐसी
प्रीतम कैसे पावऊं ॥

७. सदगुरु किरपा ब्रह्म सरूपा
है सदगुरु दातारा
कहे शिवोम् तब गुनिया
होऊं प्रीतम् पाऊं न्यारा ॥



१. सोई सुहागन राम जी को भावै
काम मोह त्यागि करि, चरनन चित्त लावै ॥
२. दूसरे की आशा छोड़ एक ही का ध्यान करे
एक ही का नाम जपै, ता के गुन गावै ॥
३. विषयों का संग छाँड़, राम ही से प्रेम करे
जगत अनोखा देख, नाही भरमावै ॥
४. जगत में जाकी वृत्ति, कमल की भान्ति रहे
वृत्ति अखण्ड जाकी, डोल नही जावै ॥
५. तीर्थ शिवोम् कहे, ताकी बलिहारी जाऊं
जा का रोम रोम नित्य, प्रेम गीत गावै ॥



१. मैं भटकत भटकत भटक रहा ।
भव बंधन में अटक रहा॥
२. पशु पक्षी और मानव हो कर
भान्ति भान्ति के स्वांग बनाए
चंचल हो कर, ठहर न पाया
अहंकार में भटक रहा
३. गिरते उठते, चलते बढ़ते
पाओं धायल, बढ़ न पाया
साहस टूटा, सांसें उखड़ी
पथ में हूं मैं लटक रहा
४. कामी क्रोधी लोभी हो कर
पाओं सूजे, नाच नाचते
विषय वासना का प्यासा मन
जग में उलटा लटक रहा
५. कभी त्यागी वैरागी होकर
पंडित वक्ता कभी रूप धर
कभी घोर हो कर संसारी
ऐसे ही मैं भटक रहा
६. बार बार जगत में आया
जग में आकर मैं पछताया
सुखी दुखी अपमानित होकर
जग में हूं मैं भटक रहा

७. अब तो मैं सहमा घबराया
मारग कोई खोज न पाया
सद्गुरु ही मारग बतलाएं
बिन मारग मैं भटक रहा

८. अब मैं शरण राम की आया
राम नाम में चित्त लगाया
कहे शिवोम् भजन कर प्राणी
निजानन्द में भटक रहा

(१९)

जय जय जय गुरु देव दया निधी

है भक्तन हितकारी

१. शरण पड़े हम दीनन तुमरे

पतित हो रहे विषय संग से

हम हैं तुमरे दर के भिखारी

दृष्टि तुम्हारी पावन कारी- जय जय जय

२. विषयन से हम तपित हो रहे

धंचल मन, विपरीत है बुद्धि

कृपा दृष्टि के सागर हो तुम

दीनों का दुःख काटन हारी- जय जय जय

३. मोह जाल में फसे हुए हैं

विषयों में हम कसे हुए हैं

मारग कोई सूझ न पाता

दया दृष्टि है अति सुखकारी - जय जय जय

४. जगत के नाते सारे तोड़े

गुरु चरणों में मन को मोड़े

राखो लाज प्रभु अब हमरी

दशा हमारी अति दुःख कारी - जय जय जय

५. कृपा प्रसाद से जाग्रत शक्ति

दीपक से दीपक जल जाता

क्रियाशील हो भगवती अम्बा

मन बुद्धि निर्मल हो जाती – जय जय जय

६. जनम जनम के कर्म हैं संचित

मन को शुद्ध न होने देते

क्रिया अलौकिक करती शक्ति

सहज चित्त शुद्धि हो जाती – जय जय जय

७. मन उपराम जगत विषयन से

अन्तर्मुख विश्राम है पाता

तुमरी दयादृष्टि से हमरी

कष्ट विपत्ति सब मिट जाती – जय जय जय

८. कृपा तुम्हारी पा कर के भी

लाभ उठा नहीं पाते हैं जो

उन का भी कल्याण करो प्रभु

कृपा तुम्हारी अति बलकारी – जय जय जय

९. अब तो दया करो प्रभु हमरे

भव सागर से पार उतारो

विनय शिवोम् की प्रभु चरणों में

करो अनुग्रह हम पर भारी – जय जय जय



(२०)

१. कर्म करना ही पड़ेगा, कर्म करना चाहिए
निःकाम हो, निष्कर्म होकर कर्म करना चाहिए
२. अनुकूलता प्रतिकूलता की भावना तज कर्म में
हो कर अकर्मी निर्भिमानी, कर्म करना चाहिए
३. अब तक सकामी और अभिमानी रहा तू कर्म में
अब तो प्रभु के वास्ते ही कर्म करना चाहिए
४. चाहते हैं सुख सभी, पर दुःख मिलता है यहां
सुख के लिए सेवा समझ कर, कर्म करना चाहिए
५. कर्म से भागे हैं क्यों निष्काम हो कर कर्म कर
करता पलायन कर्म से क्यों, कर्म करना चाहिए
६. उपदेश गीता का यही है, युद्ध कर, तू कर्म कर
सेवा समर्पण भाव से ही, कर्म करना चाहिए
७. स्थित प्रज्ञा बुद्धि योग में है चित्त की समता छिपी
स्थिर चित्त हो, कर्तव्य से ही कर्म करना चाहिए
८. मैं ने किया, मैं ने किया, अभिमान मिथ्या ही तो है
हो युक्त दैवी शक्ति से ही, कर्म करना चाहिए
९. कर्मी, अकर्मी और विकर्मी, भेद तीनों कर्म के
बन कर अकर्मी ही सदा तो, कर्म करना चाहिए
१०. मन की अशुद्धि प्राप्त की है, कर्तापन और मोह से
अब चित्त शुद्धि के लिए ही, कर्म करना चाहिए

११. अभिमान तज, अभिमान तज कर, कर्म करना चाहिए
तीरथ शिवोम् प्रगट हुआ, उपदेश यह गुरुदेव से ।

(२१)

१. वासना में डूब गयो जगत प्रपञ्च

वासना से मुक्त कोई, कोई कोई जीव

२. वासना की दुनियादारी, वासना की रिश्तेदारी

मोह से छूटे कोई, कोई कोई जीव

३. वासना के रंग न्यारे, जीव को भ्रमाते हैं

कामना से छूटे कोई, कोई कोई जीव

४. वासना अनोखी वस्तु, समझ न कोई पाता

विषयों से छूटे कोई, कोई कोई जीव

५. वासना से छूटता है, गुरु किरपा से कोई

कोई कोई जीव, कोई, कोई कोई जीव

६. तीर्थ शिवोम् कृपा करो गुरु देव

वासना विमुक्त कोई, कोई कोई जीव



(२२)

१. बिन मांझी बिन पतवार
कैसे जाऊंगी मैं सागर पार
 २. भौतिक बौद्धिक बलहीना हूं
तरना न मैं जानूं पार
 ३. अति गहरा जल तेज़ हैं लहरें
जाने न दें परले पार
 ४. वेगवान विपरीत है वायु
बढ़ने न दे आर पार
 ५. तीर्थ शिवोम् गुरु नाव पकड़ कर
उतरुंगी मैं परले पार
-
- ◆◆◆

(२३)

१. गुरु अवतार घटा मन अन्दर

आनन्द आनन्द विराजे
दृष्टि बदल गई अब ऐसी
नाद अनाहत बाजे

२. मैं तू भाव मिटा अब ऐसा

प्रेम सभी में व्यापे
नशा निरन्तर साधनमय का
राम नाम सब साथे

३. गुरु शक्ति की चेतन लीला

चेतन ही किरियाएं
भक्ति भावना, योग साधना

४. प्राणायाम अनाहत किरिया
राग रंग बहु बाजे

मन विराम पाए अति निश्चल
शुभ संकल्प उठ जागे

५. जागत सोयत धावत गावत

सतगुरु संग सुहावे

कुछ करना नहीं, जो हो सो ही

मन मस्ती में राचे

६. इस घट में ही जागे सदगुरु

अपना अहं गंवावे

सदगुरु मेरा अगम अगोचर

घट घट में सो साजे

७. चिंता भागी, मनसा त्यागी,

रमते राम रह जाएं

सहज समझ सांची सो जागे

शास्त्र पढ़न क्यों लागे

८. लहर लहर आनन्द उठे अब

प्रेम भक्ति रस जागे

मनवा तो रस लीन हुआ है

विषय भूख नहीं आजे

९. तीर्थ शिवोम् गुरु संगत पाई

हुआ दूर अंध्यारा

अन्तर भया प्रकाश अलौकिक

हुआ अनुग्रह आजे ।



१. मैं खोज फिरा जग सारा
राम कहीं नज़र न आया
२. मन्दिर मन्दिर तीरथ तीरथ
भटक भटक मैं हारा
सतसंगत में उसको खोजा
राम कहीं नज़र न आया ।
३. पुस्तक के पन्ने पलटाए
स्वांस रोक कर प्राण चढ़ाए
प्रभु मूरत में ध्यान लगाए
राम कहीं नज़र न आया ।।
४. इस से पूछा, उससे पूछा
वेष बना कर दर दर भटका
फिर भी गाम ठौर नहीं पाया
राम कहीं नज़र न आया ।।
५. सर्व नियन्ता घट घट व्यापे
बाहर ढूँडे राम न मिलते
अन्तर भ्रम है, राम मिले कब
राम कहीं नज़र न आया ।।
६. गुरु प्रसाद मन निर्मल ऐसा
भ्रम शंका निर्मल हुई सब
राम प्रकट अन्दर नहीं तब तक

राम कहीं नज़र न आया ॥
७. तीर्थ शिवोम् कृपा भई ऐसी
अन्दर बाहर राम दिखे अब
अब मन ऐसा कहत नहीं कि
राम कहीं नज़र न आया ।



(२५)

१. मेरा प्रियतम सब से न्यारा
कण माहीं व्यापक है यह
फिर भी सब से न्यारा
२. राजा में राजा हुई बैठा
रंक बना बेचारा
चींटी में अतिसूक्ष्म बना वह
फिर भी सबसे न्यारा
३. जल में बहता, थल में रहता
गगने नाद अपारा
घट घट व्यापक मेरा प्रियतम
फिर भी सबसे न्यारा
४. मन में हो कर दृष्टा रहता
बुद्धि करे विचारा
बिन प्रीतम के किरिया नाहीं
फिर भी सब से न्यारा
५. सुख दुःख होता, क्रोधी लोभी
कहीं करता हंकारा
सब रंग के रंग में वह रहता
फिर भी सब से न्यारा
६. सब घट माहीं, दीखत नाहीं
खोज फिरा जग सारा
क्योंकर पाऊं प्रीतम प्यारा

है वह सब से न्यारा
७. तीर्थ शिवोम् बिन कृपा न मिलता
दूँडत थक थक हारा
जिस चाहे वह उसे मिलाए
फिर भी सब से न्यारा

(२६)

प्रियतम के दर आई मैं
पिया मिलन की आस लिए
सब जग छोड़ के आई मैं
पिया मिलन की आस लिए

२. ऊँची दीवार पिया मिलन न देती
मिलन न देती, दर्श में बाधक
ऊँची दीवार तोड़ आई मैं
पिया मिलन की आस लिए

३. पिया मिलन का पंथ कठिन है
विषय वासना होती बाधक
पंच कठिन घल आई मैं
पिया मिलन की आस लिए

४. विन्द्र है बैठा मन के अन्दर
अपना मैं ही होता बाधक
अहंकार तज आई मैं
पिया मिलन की आस लिए

५. मन हो निर्मल, प्रभु चरणों में
भोग रहित हो बने सहायक

प्रेम धार उर आई मैं
पिया मिलन की आस लिए

६. नगत वासना सब ही छूटी
बाधक भी बन गए सहायक
तड़पत तड़पत आई मैं
पिया मिलन की आस लिए

७. तीर्थ शिवोम् पिया दर्शन दीजो
मन की पीर सभी हर लीजो
जग विलीन कर आई मैं,
पिया मिलन की आस लिए



(२७)

१. नारायण गोविन्द माधव

राम हरे जय राम हरे

शरण पड़े भक्तन को तारो

राम हरे जय राम हरे

२. हम अज्ञानी चंचल बालक

दुखी सुखी जग में होते

टेर सुनो हे हरि हर अब तो

राम हरे जय राम हरे

३. शरण तुम्हारी जो भी आता

खाली हाथ नहीं जाता

मुझ पर भी उपकार करो प्रभु

राम हरे जय राम हरे

४. नाना देव बना प्रभु तू ही

नाम रूप विस्तार तेरा

हो तू मुझ में प्रकट प्रकाशित

राम हरे जय राम हरे .

५. सीमाओं में बद्ध जीव मैं,

तू असीम है गहर गम्भीर

सीमा मुक्त करो प्रभु मुझको

राम हरे जय राम हरे
६. मैं बालक में शिष्य तुम्हारा
माता पिता गुरु स्वामी तू
मंगल दान करो प्रभु मुझ को
राम हरे जय राम हरे
७. तुमने तारे जीव अनेकों
तीर्थ शिवोम् कृतार्थ करो
चरण पड़ा हूं, शरण पड़ा हूं
राम हरे जय राम हरे



मेरा प्रियतम हर दम पास मेरे

१. जब मैं सोऊँ तब वह सोए
 जब जागूँ तब जागे
 उक्त बैठत खावत धावत
 रहता हर दम पास मेरे

२. अन्तर बाहर व्यापक प्रियतम
 रोम रोम में रमता है वह
 करे कृपा तब अनुभव होता
 बसता हर दम पास मेरे

३. मन वाणी आंखों में व्यापक
 करता क्रिया अनेकों हर दम
 देखूँ लीला उस की पलपल
 रमता हर दम पास मेरे

४. वृत्ति चंचलं दुख उपजाती
 वह देखे सुख पाती है
 क्यों भरमावे मन को प्राणी
 प्रियतम हर दम पास तेरे

५. तीर्थ शिवोम् मस्त हुआ ऐसा
 अन्दर बाहर यह ही वह है
 गुरु किरपा से अनुभव ऐसा,
 प्रियतम हर दम पास मेरे ।



(२९)

मेरो मन राम ही राम रहत है ।

१. जा दिन से किरपा भई मो पर

भूख विषय की घटत है ॥

२. भोग वासना मिथ्या जग की

मन से काम हटत है ॥

३. चित्त लागा है हरि चरनन में

मोह जंजाल कटत है ॥

४. तीर्थ शिवोम् किरपा सद्गुरु की

प्रेम हृदय न हटत है ॥



(३०)

१.राम की दुल्हनियां मैं, राम घर जाऊंगी ।

राम घर जाऊंगी मैं हरि घर जाऊंगी ॥

२.राम ही से नाता मेरा, जगत के मोह नाते

मोह नाते त्याग सब, प्रियतम पाऊंगी ॥

३.जगत प्रपञ्च सारा काम विकार भारी

वासना विलीन कर कामना हटाऊंगी ॥

४.विषयों का संग त्याग, ममता का साथ छोड़

प्रभु अनुराग से मैं, रामजी को भाऊंगी ।

५.जगत के भोग सारे, बंधन के हेतु बनते

प्रेम अनुराग रूप, राम राम गाऊंगी ॥

६.क्रोध लोभ मोह त्याग, हृदय राम चरण धार

वासना विहीन बन, निज घर जाऊंगी ।

७.प्रभु सेवा हृदय धार, मन मैं विचार कर

भजन भाव ध्यान मैं, मैं मन को लगाऊंगी ।

८.राम राम गाते गाते, राम राम ध्याते ध्याते

राम गुण गान कर, प्रेम घर जाऊंगी ॥

९.तीर्थ शिवोम् कहे, प्रभु गुणगान करो

चित्त श्रृंगार कर, पति को रिश्वाऊंगी ॥



(३१)

१. जगत की धुन में, राम विसर गयो
चंचल मन हो, चित्त बिखर गयो ॥
२. मन भोगों में मस्त हो रहा
भोग ही भोग रिज्जाते
मैं भोगी अंधा अविवेकी
मारग भटक गयो ॥
३. काम का मारा, मोह का रोगी
क्रोध लोभ के बंधन में हूं
विषय आकर्षित करते मुझ को
भव बंधन में अटक गयो ॥
४. मिथ्या जग है सत्य भासता
दर्पणवत् मैं सोच न पाता
करो कृपा प्रभु हरि हर अब तो
भ्रम हिरदय में खटक रह्यो ॥
५. बंधन शिथिल करो प्रभु मोरे
धैर्य है मेरा टूटा जाता
दया तुम्हारी मेरा संबल,
गुण माया में लटक रह्यो ॥
६. तीर्थ शिवोम् प्रभु शरण में आया
गुरु किरपा का आश्रय पाया
विष्णु तीर्थ प्रभु तुमरी दया से
भव है पीछे छूट गयो ॥

(३२)

भजन बिन विरथा जनम गयो

१.क्रोध मद लोभ के कारण मन आसक्त भयो

२.जा दुनिया में मन को दीनो, न कुछ साथ गयो

३.जब से भई वियोग की पीड़ा, न मन शान्त रह्यो

४.जग कारण प्रभु को भूला, सुख न हाथ पयो

५.मग मारा फिरता फिरता, मिथ्या भ्रमित रह्यों

६.खोजन के कारण जग में, भटकत भटक रह्यो

७.शिवोम् गुरु किरपा कीनी, मन भ्रम दूर भयो



- १.करी किरपा गुरुदेव, चित्त निर्मल तब ही से
सीमाएँ गई टूट, अनन्त का अनुभव तब से
- २.गुरु किरपा से शक्ति जागी, क्रियावती तब ही से
लीला करती अपरम्पारा, पाप क्षीण तब ही से
- ३.सोहम नाद घटा घट अन्दर हुआ ज्ञान तब ही से
तू और मैं का भेद मिटा कर, प्रकट प्रेम तब ही से
- ४.गलित हुआ अभिमान, हटा परदा तब ही से
अनुभव कर निज रूप, अविद्या हट गई तब से
- ५.नाम रूप का संशय टूटा, शक्ति का विस्तारा
तिमिर हटा, शंका निवृत्ति, अखण्ड आनन्द तब ही से
- ६.तीर्थ शिवोम् गुरु है तीरथ, गुरु कृपा बलकारी
कर अज्ञान क्षीण गुरुवर ने दर्श कराया तब से ।



१. गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव देवा
जय गुरुदेवा जय गुरुदेवा
२. ब्रह्मा विष्णु के तुम देवा
सब देवों के तुम ही देवा
३. सारा जग है तेरी लीला
कण कण व्यापक जय गुरुदेवा
४. शक्ति तुम्हरी जागृत हो कर
करती निर्मल हे गुरुदेवा
५. युगों युगों से सोई शक्ति
होती जाग्रत हे गुरुदेवा
६. राग रंग अन्तर धून बाजे
क्रिया अलौकिक हे गुरुदेवा
७. प्रकट अनेकों दृश्य अनूठे
भक्ति भाव होता गुरुदेवा
८. कभी क्रियाएं मत्त सरीखी
कभी स्तब्धता हे गुरुदेवा
९. होता आत्मा रमण प्रकाशित
अखण्ड समाधि हे गुरुदेवा
१०. तीर्थ शिवोम् गुरु किरपा कीनी
जगत विलीन भया गुरुदेवा



१. तेरा नाम अनोखा, रूप अनोखा,
 सब से न्यारा है तू
 तेरा धर्म अनोखा कर्म अनोखा
 सबका प्यारा है तू

२. तेरा नाम है चेतन, रूप सचेतन
 कण कण में है रमता
 कर्ता भर्ता हो कर के भी
 जग से न्यारा है तू

३. भक्तों में प्रेमी बन बैठा
 योग में ध्यान कमाता
 ज्ञानी तपसी होकर
 सबसे न्यारा है तू

४. जग प्रकाश तेरे बिन नाहिं
 तेरा सकल पसारा
 तू ही विषयासक्त बना है
 फिर भी न्यारा है तू है

५. तू ही योग भोग बैरागी
 रूप अनेकों धरता
 मानव दानव पशु बना तू
 फिर भी न्यारा है तू

६. बंधन मुक्त करे जीवों को
 अहंभाव प्रकटाता
 बंधन मुक्त भी तू ही करता

फिर भी न्यारा है तू

७. गुरु तत्व में कहीं प्रकट तू

कहीं श्रद्धा दर्शाता

चेतन नाम करे अन्तर में

फिर भी न्यारा है तू

८. गुरु कृपा प्रसाद से जाग्रत

शक्ति अन्तर्मुख होती

क्रिया अलौकिक अद्भुत करती

फिर भी न्यारा है तू

९. तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े

करो अनुग्रह मो पर

अपना रूप प्रकाशित मुझ पर

जग से न्यारा है तू



१. जो भारत है, वह है भारत,
 भा रत ऐसा रूप महान
 भारत वासी भा रत नाहीं
 क्योंकर होगा देश महान
२. भा फैला सर्वत्र जगत में
 अनुभव में नहीं आता हैं
 चित्त शुद्ध हो, भा रत मानव
 तभी बनेगा देश महान बन
३. सारा जग भारत के अन्दर
 भारत से कुछ दूर नहीं
 देश देश जब भा रत होगा
 देश देश तब बने महान
४. ज्ञान कर्म भक्ति का साधन
 जब प्राणी भारत होगा
 राग द्वेष से रहित चित्त तब
 बन जाएगा देश महान
५. तीर्थ शिवोम् गुरु चरणों में
 भारत प्रभु मुझे कर दो
 भा रत भा रत भा रत होकर
 भारत होगा देश महान



(३७)

काह करूँ ? मन मानत नाहीं
बार बार समझाय थकी मैं
बुरा कुछ जानत नाहीं

१. जगत भोग को धावत है वह
विषय भोग का भूखा
ऐसा मूढ बना मेरा मनवा
सुख क्या ? जानत नाहीं

२. चंचल हुआ भटकता फिरता
पल भर चैन न पाता
क्षण क्षण विषय बदलता रहता
थिरता क्या है ? जानत नाहीं

३. मोह क्रोध में बन मतवाला
न कुछ समझे बूझे
मस्त हस्ती की नाई फिरता
श्रेय प्रेय कुछ जानत नाहीं

४. कब समझेगा ? कब जागेगा
मैं कुछ समझ न पाती
मन के मारे आकुल व्याकुल
हो निराश कुछ जानत नाहीं

५. तीर्थ शिवोम् है गुरु-शरण में
मन मेरा समझा दो
जीवन बीत चला अब पल पल
मन तो मानत नाहीं



अब की सुनो पुकार प्रभु जी
शरण राम की मैं आई

१. राम ही मेरा संगी साथी

राम मेरा प्रीतम प्यारा
राम नाम की डोरी पकड़ी
शरण राम की मैं आई

२. दुनिया देखी दुनिया तोली

सार नहीं कुछ भी पाया
सेवामय भक्ति अपनाकर
शरण राम की मैं आई

३. भोगों से मुंह मोड़ा मैंने

जग से नाता तोड़ा मैंने
राम से रिश्ता जोड़ा मैंने

शरण राम की मैं आई

४. सद्गुरुदेव कृपा हुई भारी

हृदय प्रेम से बींध दिया
अब मैं मगन प्रेम भई ऐसी

शरण राम की मैं आई

५. हृदय जगत उपराम हुआ अब
रस भोगों का क्षीण हुआ
भक्ति प्रेम वृत्ति को भाया

शरण राम की मैं आई

६. राम की धुन है, राम ही प्यारा
राम की आस लगी मन में
दुखियारी प्रभु राम शरण में

शरण राम की मैं आई

७. तीर्थ शिवोम् गुरुकृपा अनन्ता
भक्तिभाव मन में जागा
काटो बंधन रघुवर प्यारे
शरण राम की मैं आई



१. जगत हुआ है बावरा, माया का अंध्यारा
माया अन्दर देव अनेकों माया का विस्तारा
२. मानव पशु समान हुआ है, विषय भोग है भाता
मोह में लीन बेचारा मानव, मोह का सकल पसारा
३. माया ममता मोह न छूटे, मन भोगों में जाता
सुखी दुखी होता है मन में, भोगों का परिवारा
४. माया छूटत गुरु कृपा से, कर्म पाप कट जाते
शक्ति जाग्रत क्रियावती हो, नष्ट पाप भण्डारा
५. करती क्रिया अलौकिक भीतर, क्षीण पाप हो जाते
तृष्णा मिटती काम वासना, जय जय गुरु अपारा
६. तीर्थ शिवोम् तू राम भजन कर, ताप पाप मिट जाते
गुरु मारग अपना कर मानव, विलय हुआ संसारा



(४०)

१. दीनदयाल दीनन हितकारी
मुझ दुखिया पर कृपा करो
कष्ट ही कष्ट हैं ज्ञेले मैंने
मुझ दुखिया पर कृपा करो
२. बारम्बार जगत में आ कर
रूप अनेकों धर आई
जन्म मरण का बंधन काटो
मुझ दुखिया पर कृपा करो
३. भोग सताते, विषय लुभाते
अति चंचल है मन मेरा
भोग वासना क्षीण करो प्रभु
मुझ दुखिया पर कृपा करो ।
४. यत्र साधना कर कर हारी
मारग सूझ नहीं पाया
मार प्रकट करो अब गुरुवर
मुझ दुखिया पर कृपा करो
५. गुरु बिना है सकल अंधेरा
अब मुझ को स्वीकार करो
चरण में आई, शरण पड़ी हूं
मुझ दुखिया पर कृपा करो

६. कृपा तुम्हारी अपरम्पारा
मार्ग प्रेम का दिखलाती
प्रेम की वर्षा से मैं भीगूं
मुझ दुखिया पर कृपा करो

७. अमृतमयी कृपा गुरु कीनी
तीर्थ शिवोम् निहाल हुआ
विष्णु तीर्थ प्रभु मेरे गुरुवर
मुझ दुखिया पर कृपा करो

(४१)

१. कृपा दृष्टि का वर्णन करना

मानव का अधिकार नहीं

अनन्त अपार का वर्णन करना

मानव का अधिकार नहीं

२. गुरु कृपा की वृष्टिहोती

जब साधक के तन मन पर

उस अनुभव का वर्णन करना

मानव का अधिकार नहीं

३. चित्त शुद्धि की दिव्य क्रियाएं

अनुभव होती नित्य निरंतर

दिव्य क्रिया का वर्णन करना

मानव का अधिकार नहीं

४. ईश्वर अपरम्पार अनन्ता

विस्तृत सीमा रहित अपार

उस के एक अंश का वर्णन

मानव का अधिकार नहीं

५. गुरु शक्ति है रूप दिखाती

दिव्य अलौकिक रंग अनेक

उन रंगों का वर्णन करना

मानव का अधिकार नहीं

६. सोहम नाद गूंजता अन्दर

साधक पाता सुख अलौकिक

सुख अनुभूत का वर्णन करना

मानव का अधिकार नहीं

७. जल में जल जब मिल जाता है

गहराई का अनुभव होता

गहराई का वर्णन करना

मानव का अधिकार नहीं

८. तीर्थ शिवोम् कहे निज अनुभव

बद्ध जीव क्या जाने ईश्वर

ईश कृपा का वर्णन करना

मानव का अधिकार नहीं



(४२)

१. वासनानुसार जीव जगत में आता है
वासना से दुःख सुख जीव फिर पाता है
२. चित्त की अशुद्धि जब जीव को भ्रमाती
भ्रमित चित्त जीव फिर कर्म फल पाता है
३. कामना कुरूप बड़ी, उदय अस्त अन्तहीन
घूमता बेचारा जीव, चक्र में घुमाती है
४. क्रोध बड़ा अत्याचारी, बुद्धि को मलीन करे
क्रोधवश जीव बुद्धि शुद्ध नहीं पाता है
५. लोभ है भयंकर बड़ा, धर्म का विवेक खोता
लोभी जीव जगत में, पड़ा चक्र खाता है
६. गुरुदेव कृपा करें, तभी छुटकारा होवे
नहीं जीव, कर्मों के ही फल खाता है
७. तीर्थ शिवोम् प्रभु दीनों के हितैषी तुम
तुमरी कृपा से जीव मुक्ति लाभ पाता है



१. गुरु प्रेम में रंगा जीव जब
 मुक्त तभी हो पाता है
 प्रेम भक्ति मारग अपना कर
 गुरु लीन हो जाता है
२. गुरु प्रेम का रंग अनोखा
 सुखी जीव रंगत में होता
 ज्यों ज्यों रंग है चढ़ता जाता
 अति आनंद सुख पाता है
३. गुरु कृपा की वर्षा में जब
 मन मस्ती को पाता है
 मन ही मन आनन्दित होता
 तभी प्रेम सुख पाता है
४. गुरु संगत की महिमा न्यारी
 सभी जगह उपलब्ध नहीं
 राम कृपा से ही मानव को
 गुरु दर्शन हो पाता है
५. गुरु राम में अन्तर नाहीं
 राम ही गुरु रूप जग में
 जगत है सारा गुरु पसारा
 भेद कृपा से पाता है

६. विष्णु तीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से
तीर्थ शिवोम् कृतार्थ हुआ
सेवा प्रेम भक्ति का सम्बल,
गुरुदेव बन जाता है

(४४)

१. सीता राम सीता राम गाए जा
मन की मैल मिटाए जा
सीता राम सीता राम ध्याए जा
अक्षय सुख तू पाए जा
२. राम है तेरे अन्दर बैठा
देख नहीं तू पाता
गुरु कृपा से राम प्रकट हो
देखत दर्शन पाए जा
३. अन्दर होते राम प्रकट जब
अंधकार मिट जाता है
राम शक्ति की क्रियाशीलता
मन में अनुभव पाए जा
४. राम की सेवा जान कर्म कर
बंधनकारक कर्म नहीं
सेवा प्रेम का भाव पकड़ कर
सुख आनन्द तू पाए जा
५. राम कृपा से अनुभव होगा
राम की शक्ति सब करती
राम कृपा का आश्रय लेकर
मन का मैल तू धोये जा

६. सीता जगदम्बा राम की शक्ति
 नाम रूप विस्तार किया
 सीता शक्ति राम अधारा
 तिन की कृपा तू पाए जा
७. जब सीता अनुभव में आती
 क्रियाशील होती तब ही
 सीता कृपा तू अर्जित कर के
 राम मिलन- पथ पाए जा
८. सीताराम दया के सागर
 प्रेम का पंथ दिखाते हैं
 राम का प्रेमी बन कर
 प्राणी सीता शक्ति ध्याए जा
९. सीता विलय राम में होती
 जीव भाव मिट जाता है
 बूँद मिल गई सागर में जब
 निजानन्द को पाए जा
१०. तीर्थ शिवोम् गुरु राम मिलें
 जब मैं तू भेद नहीं रहता
 राम की सेवा, राम की भक्ति
 जीवन का फल पाए जा



(४५)

१. मेरी अर्जी प्रभु के हाथ
सुनाई कब होगी
प्रभु करते न्याय अपार
सुनाई कब होगी
२. कब की रस्ता देख रही हूं
स्मरण पत्र भी भेज रही हूं
प्रभू सुनते नहीं पुकार
सुनाई कब होगी
३. मैं थक हारी आशा करते
आशा करते आहें भरते
अब सुन लो मेरी पुकार
सुनाई कब होगी
४. धैर्य भी मेरा टूटा जाता
जगत भी हाथ से छूटा जाता
हुआ है मन उपराम
सुनाई कब होगी
५. जप तप साधन संयम करते
दिन कट गए प्रतीक्षा करते
नहीं पसीजे राम
सुनाई कब होगी
६. सुनते राम दया की बातें
जगत है करता अपनी धातें
मुझे बचा लो राम
सुनाई कब होगी

७. बिन गुरु कृपा नहीं राम रीझते
तीर्थ शिवोम् प्रभु किरपा करते
फिर करना नहीं पुकार
सुनाई कब होगी

१. प्रभु अनन्त माया अनन्त
 कोई न जानन हारा
 यत्व करे जानन को जो भी
 पढ़ पढ़ सुन सुन हारा
२. योगी हो कर ध्यान लगावें
 ज्ञानी करे विचारा
 भक्त कीरतन कर कर थाका
 न जाना विस्तारा
३. युक्ति दे दे वक्ता बनता
 चित्त रहा अँध्यारा
 प्राणायाम करे हठ योगी
 मिला न किसे किनारा
४. तिलक लगावे जटा बढ़ावे
 भस्म लगावे तन पर
 माया ब्रह्म का अन्त अगोचर
 अनुभव नाहीं पसारा
५. यति तपस्वी हठी ज्ञानी
 हार गए सारे ही
 माया ब्रह्म का सार न पाया
 क्या क्या करे बेचारा

६. माया सारा जगत नचाया

ब्रह्म गुप्त हो बैठा
गुरु से मारग सूझे तब ही
तो होवे निस्तारा

७. व्यष्टि चेतना विन्न है भारी

अहंकार का परदा
गुरु मारग से परदा उठ जाए
मन आनन्द अपारा

८. आत्म भाव जब चित्त से उठता

चेतन में स्थित होता
व्यष्टि चेतना त्याग समष्टि
रहा न आरा पारा

९. तीर्थ शिवोम् अभिमान छोड़ कर

कर ले गुरु की सेवा
नाम कमाई, नाम जाग्रत
भेद खुलेगा सारा



१. नाम कमाई कर ले प्यारे, नहीं तो तू पछताएगा
जीवन बीत रहा है पल पल, भव में गोते खाएगा
२. समय अमूल गवां न प्राणी, समय निकलता जाता है
शुभ कर्म और प्रभु की सेवा, बेड़ा पार लगाए जा
३. मोह जाल में फँसना न तू, मुक्ति का साधन कर ले
प्रभु प्रेम ईश्वर की सेवा, जन्म मरण कट जाएगा
४. दोष पराए क्यों देखे तू, निज दोषों का ध्यान करे
प्रभु कृपा से निर्मल मन हो, चित्त शुद्ध हो जाएगा
५. जगदासक्ति बुरी वासना, चित्त शुद्धि की शत्रु है
गुरु शक्ति को जाग्रत कर ले, प्रभु प्रेम तू पाएगा
६. मन रहता विषयों में रमता, समझ नहीं तू पाता है
विषय राग को दूर हटा तू, तो ही तू सुख पाएगा
७. तीर्थ शिवोम् प्रभु किरपा से, गुरु से मारग पाएगा
तब ही तेरा ताप हरण हो, तू निर्भय गति पाएगा



१. जो गुरु सेवा हैं अपनाते
 वे मन वांछित फल पाते हैं
 वासना क्षीण मन की कर के
 वे मोह मुक्त हो जाते हैं
२. सीमा टूटी, बंधन टूटे
 मिथ्या अभिमान गया मन से
 वे बंधन मुक्त हुए जग से
 तब सत्य रूप हो जाते हैं
३. प्रभुनाम नहीं मिलता जग में
 अत्यंत कठिन वह दुर्लभ है
 गुरु सेवा से हो सुलभ सहज
 जो करते सोई पाते हैं
४. गुरु से उदास मानव जब ही
 मन होता विषयासक्त तभी
 ऐसे मानव दुःख पाते हैं
 और जीवन व्यर्थ गंवाते हैं
५. विद्रान करें विद्या अर्जित
 योगी हो लीन समाधि में
 मन होता संयत फिर भी नहीं
 जीवन भर कष्ट उठाते हैं
६. साधु का वेष धरे कोई
 कोई भटके तीरथ तीरथ में
 पर मन का भेद नहीं पाया
 अभिमान बढ़ाते जाते हैं

७. सत संगत सतगुरु की सेवा
हो चेतन नाम तभी मन में
वह पूज्य प्रकाशित है जग में
जो गुरु चरनन चित्त लाते हैं
८. यह विनय करे तीरथ शिवोम्
हे गुरुदेव अब अपना लो
जो गुरु कृपा अर्जित करते,
वह ही जीवन फल पाते हैं ।
-

(४९)

१. नाम प्रभु का मीठा देखा
जिन पीया सोई जाने रे
नाम प्रभु रस अनुप अनोखा
जिन पीया सोई जाने रे
२. जैसे मछली नीर प्यासी
तड़प तड़प मर जावे रे
तैसे नाम बिना सुख नाहीं
जिन पीया सोई जाने रे
३. कथनी वर्णन से वह न्यारा
प्रियतम मेरा साजे रे
नाम बिना सुख नाहीं जग में
जिन पीया सोई जाने रे
४. पी पी प्याला तृसि होई
तृषा वासना भागी रे
चढ़ी खुमारी उतरत नाहीं
जिन पीया सोई जाने रे
५. नाम सरोवर मन माहीं है
माया मिलन न देवे रे
माया टूटे नाम मिले तब
जिन पीया सोई जाने रे

६. मुख देखूं तृसि पाऊं तब
बिन दर्शन चैन न आवे रे
दर्शन प्याला जिन जिन पीया
जिन पीया सोई जाने रे

७. प्रभु कृपा बिन प्राप्त न होता
मानुष क्यों भरमावे रे
प्रभु प्रेम का प्याला भर भर
जिन पीया सोई जाने रे

८. करो व्यापार नाम का प्यारे
दुनिया छोड़ बखेड़े रे
नाम नशा नित बढ़ता जाए
जिन पीया सोई जाने रे

९. तीर्थ शिवोम् राम भज प्राणी
उतरे पार घनेरे रे
नाम प्याला पीवत नाहीं
जिन पीया सोई जाने रे



१. प्रेम की वर्षा रूनद्वृन रूनद्वृन
 मेरा प्रीतम प्रकटाए
 प्रेम अनोखा रूप अनोखा
 मो पर कहा न जाए
२. मन है लोभी प्रभु प्रेम का
 विषयों में नहीं धाए
 प्रीतम रूप अति ही प्यारा
 ता पर मन खिंच जाए
३. प्रीतम प्यारा जग से न्यारा
 महिमा कही न जाए
 जगत मोह न छोड़े प्राणी
 क्यों कर प्रीतम पाए
४. मन आनन्द हुआ अति भारी
 प्रेम का रूप बढ़ाए
 प्रेम ही अन्दर, प्रेम है बाहर
 विषय वासना जाए
५. अब मन जग में लागत नाहीं
 पिया ओर खिंच जाए
 भर भर प्रेम तू रस का प्याला
 क्यों न पिए पिलाए

६.मन मतवाला प्रेम सरोवर

डूबत डूबत जाए

जगत के भोगों में नहीं रीझूं

रस में भीगा जाए

७.रूप अलौकिक देख प्रीतम

मन मे उतरत जाए

प्रेम हुआ मेरे प्रीतम सों

प्रीतम ही मन भाए

८.प्रेम बिना सारा जग सूना

प्रेम सों ही जग भाए

प्रीतम सर्व व्यापक बैठा

अपनी ओर बुलाए

९.विष्णु तीर्थ प्रभु तुमरी कृपा से

मन निर्मलता पाए

तीर्थ शिवोम् हुआ किरतारथ

पल पल दर्शन पाए



45

39

81

(၃၄)

၃၁

83

,

-

;

